بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in 23.09.2022 محلہ احمدیہ قادیان143516 ضلع گورداسپور(پنجاب) انڈیا

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु की आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से इश्क़ व मुहब्बत की अद्वित्तीय तथा ईमान वर्धन घटनाओं का वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसिहिल अज़ीज, बयान फ़र्मूदा 23 सितम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के गुण तथा विशेषताएँ बयान हो रही थीं, आज भी यह सिलसिला जारी रहेगा। हज़रत आयशा रज़ी. ने आयत الَّذِينَ اسْتَجَابُوا لِلَّهِ وَالرَّسُولِ مِن بَعْدِ مَا أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ لِلَّذِينَ أَحْسَنُوا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ अर्थात- वे लोग जिन्होंने अल्लाह और रसूल को लब्बैक (उपस्थित हं) कहा, बाद इसके कि उन्हें घाव लग चुके थे, उनमें से उन लोगों के लिए जिन्होंने एहसान किया और तक़्वा धारण किया, बहुत बड़ा बदला है, के संदर्भ में अपनी बहन के बेटे उर्वा से फ़रमाया कि हज़रत ज़ुबैर रज़ी. और हज़रत अबू बकर रज़ी. उन लोगों में से थे कि जब ओहद के युद्ध वाले दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कष्ट हुआ तथा मुशरिक चले गए तो आप स. ने मुशरिकों के वापस आने की आशंका पर फ़रमाया कि इनके पीछे कौन जाएगा, तो सत्तर आदमियों ने अपने आपको पेश किया जिनमें हज़रत ज़ुबैर रज़ी. और हज़रत अबू बकर रज़ी. भी शामिल थे।

अबू सुफ़यान ओहद की लड़ाई के बाद अगले साल बदर नामक स्थान पर युद्ध का वादा करके अपनी सेना लेकर मक्का की ओर रवाना हो गया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. बयान करते हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने और अधिक सावधानी के कारण सत्तर सहाबियों का एक दल हज़रत ज़ुबैर रज़ी. तथा हज़रत अबू बकर रज़ी. सहित क़ुरैश की सेना के पीछे ख़बर लाने के लिए रवाना फ़रमाया तथा फ़रमाया कि यदि क़ुरैश ऊँटों पर सवार हों और घोड़े ख़ाली हों तो समझना कि वे मक्का वापस जा रहे हैं और यदि वे घोड़ों पर सवार हों तो समझना कि उनकी नीयत ठीक नहीं। यदि उनकी दिशा मदीना की ओर हो तो मुझे तुरन्त सूचित किया जाए। आप स. ने फ़रमाया कि यदि अब

क़ुरैश ने मदीना पर हमला किया तो ख़ुदा की क़सम हम उनको मज़ा चखा देंगे, परन्तु आप स. को सूचना मिली कि क़ुरैश की सेना मक्का की ओर वापस जा रही है।

हुदैबियः की सन्धि की शर्तों के अनुसार जब अबू जन्दल रज़ी. को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वापस कर दिया तो सहाबी बड़े जोश में थे। इस घटना का वर्णन हज़रत मुसलेह मौऊद रज़ी. ने भी बयान फ़रमाया है। आप रज़ी. फ़रमाते हैं कि एक बार रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबियों को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि मैंने तुम लोगों को अनेक आदेश दिए किन्तु मैंने तुमसे अधिक विश्वस्त लोगों के अन्दर भी कई बार आन्दोलन की रूह देखी, किन्तु अबू बकर रज़ी. के अन्दर मैंने यह रूह कभी नहीं देखी। अतः हुदैबियः की सन्धि के अवसर पर हज़रत उमर रज़ी. जैसा इंसान भी घबरा गया तथा वे उसी घबराहट की अवस्था में हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में गए तथा कहा कि क्या हमारे साथ ख़ुदा का यह वादा नहीं था कि हम उमरा करेंगे। उन्होंने कहा कि हाँ, ख़ुदा का वादा था। उन्होंने कहा कि क्या ख़ुदा का हमारे साथ यह वादा नहीं था कि वह हमारी सहायता एवं समर्थन करेगा। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने कहा कि हाँ था। उन्होंने कहा- तो फिर क्या हमने उमरा किया। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने कहा- उमर, ख़ुदा ने कब कहा था कि हम इसी साल उमरा करेंगे। फिर उन्होंने कहा कि क्या हमको विजय एवं सहायता मिली। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने कहा कि ख़ुदा और उसका रसूल विजय एवं सहायता का अभिप्रायः हमसे अधिक समझते हैं। परन्तु उमर की इस जवाब से संतुष्टि नहीं हुई तथा वे उसी घबराहट की अवस्था में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे तथा निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह! क्या ख़ुदा का हमसे यह वादा न था कि हम मक्का में परिक्रमा करते हुए प्रवेश करेंगे। आप स. ने फ़रमाया कि हाँ। उन्होंने निवेदन पूर्वक कहा- क्या हम ख़ुदा की जमाअत नहीं और क्या ख़ुदा का हमारे साथ विजय एवं समर्थन का वादा नहीं था? आप स. ने फ़रमाया, था। हज़रत उमर रज़ी. ने कहा- तो या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, क्या हमने उमरा किया। आप स. ने फ़रमाया कि ख़ुदा ने कब कहा था कि हम इस साल उमरा करेंगे, यह तो मेरा विचार था कि इस साल उमरा होगा, ख़ुदा ने तो कोई निश्चित समय नहीं बताया था। उन्होंने कहा- तो फिर विजय एवं समर्थन के वादों का क्या अर्थ हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया- सहायता ख़ुदा की ओर से अवश्य आएगी और जो वादा उसने किया है वह हर हाल में पूरा होगा। इस प्रकार जो जवाब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने दिया था वही जवाब रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. ने फ़रमाया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्य धर्मों के मानने वालों का भी अत्यधिक ध्यान रखा करते थे। एक बार हज़रत अबू बकर रज़ी. के सामने किसी यहूदी ने कह दिया कि मुझे ख़ुदा की क़सम, जिसने मूसा को सब नबियों पर प्रमुखता दी है। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उसे थप्पड़ मार दिया। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जब इस घटना की सूचना मिली तो आप स. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. का डांटा और फ़रमाया कि ऐसा क्यूँ

किया? यहूदी को अधिकार है कि जो चाहे आस्था रखे अर्थात अपनी आस्थानुसार वह जो चाहे बोल सकता है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से हज़रत अबू बकर रज़ी. के इश्क़ व मुहब्बत को बयान करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. बयान फ़रमाते हैं कि मक्का से मदीना हिजरत के अवसर पर भी और आप स. के निधन के अवसर पर भी हज़रत अबू बकर रज़ी. का सम्बंध आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से स्नेह पूर्ण था। जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सूरः अल-नस्र नाज़िल हुई जिसमें आप स. के निधन की गुप्त सूचना थी तो आप स. ने सहाबियों को सम्बोधित करके फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने अपने एक बन्दे को अपनी निकटता तथा सांसारिक उन्नति में से एक की अनुमति दी है और मैंने ख़ुदा तआला की निकटता को प्राथ्मिकता दी। समस्त सहाबी इस पर प्रसन्न हुए परन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. की चींख़ें निकल गईं और आप रज़ी. व्याकुल होकर रो पड़े और कहा कि या रसूलुल्लाह! आप स. पर हमारे माँ बाप बीवी बच्चे सब बलिदान हों। आप स. के लिए हम हर चीज़ क़ुर्बान करने को तय्यार हैं। मानो जिस प्रकार किसी प्रिय के बीमार होने पर बकरा क़ुर्बान किया जाता है उसी तरह हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपनी तथा अपने सब प्रिय जनों की क़ुर्बानी आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए पेश की। हज़रत उमर रज़ी. सहित समस्त सहाबी हज़रत अबू बकर रज़ी. के रोने तथा इस प्रकार को बात करने पर चकित थे। तब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबू बकर रज़ी. मुझे इतने प्रिय हैं कि यदि ख़ुदा तआला के अतिरिक्त किसी को ख़लील बनाना वैध होता तो मैं इनको ख़लील बनाता, किन्तु अब भी ये मेरे दोस्त हैं। फिर फ़रमाया कि मैं आदेश देता हूँ कि आज से मस्जिद में खुलने वाली सब लोगों की खिड़कियाँ बन्द कर दी जाएँ, अबू बकर की खिड़की के अतिरिक्त। इस तरह आप स. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. के अपने साथ इश्क़ की सराहना की, क्यूँकि यह सम्पूण इश्क़ था जिसने उन्हें बता दिया कि इस विजय एवं सहायता के पीछे आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन की सूचना है और आप रज़ी. ने अपनी तथा अपने प्रिया की जान को बलि के रूप में पेश कर दिया।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि हदीसों में आता है कि एक बार हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. की किसी बात को लेकर तकरार हो गई और हज़रत अबू बकर रज़ी. और अधिक झगड़ा बढ़ जाने की सम्भावना से वहाँ से जाने लगे तो हज़रत उमर रज़ी. ने हज़रत अबू बकर रज़ी. का कुर्ता पकड़ लिया कि मेरी बात का जवाब दो। इस कारण से हज़रत अबू बकर रज़ी. का कुर्ता फट गया। हज़रत उमर रज़ी. ने आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में जाकर अपनी ग़लती को स्वीकार किया, जिस पर आप स. ने फ़रमाया कि जिस समय पूरी दुनिया मेरा इंकार करती थी उस समय अबू बकर मुझ पर ईमान लाया और हर रंग में मेरी सहायता की। इसी बीच हज़रत अबू बकर रज़ी भी पहुंचे तो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अप्रन्नता देख कर अपनी ग़लती स्वीकार करने लगे। यही हज़रत अबू बकर रज़ी. का इश्क़ था कि वे आप स. की पीड़ा को सहन न कर सके।

रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के बाद जब कुछ क़बीलों ने ज़कात देने से इंकार किया तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उनके साथ युद्ध करने का निश्चय किया। हज़रत उमर रज़ी. ने नर्मी करने का सुझाव दिया किन्तु हज़रत अबू बकर रज़ी. ने जवाब दिया कि अबू क़हाफ़ा के बेटे का क्या साहस है कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश को निरस्त कर दे। यदि ये लोग आप स. के ज़माने में एक रस्सी भी ज़कात में दिया करते थे तो मैं वह रस्सी भी इनसे लेकर रहूँगा तथा उस समय तक दम नहीं लूँगा जब तक ये लोग ज़कात नहीं देंगे। यह है इश्क़ व मुहब्बत का उदाहरण कि गम्भीर प्रस्थिति में भी जब सहाबी लड़ाई न करने का सुझाव दे रहे थे तो हज़रत अबू बकर रज़ी. रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आदेश को पूरा करने के लिए तय्यार हो जाते हैं। इसी तरह उसामा की सेना को रोकने के लिए सहाबियों के सुझाव को रद्द करते हुए भी हज़रत अबू बकर रज़ी. ने फ़रमाया कि यदि दुश्मन शक्ति शाली होकर मदीना पर विजय पा ले और मुसलमान महिलाओं के शव कुत्ते घसीटते फिरें तब भी मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के द्वारा तय्यार की हुई सेना का नहीं रोक सकता।

इराक़ की विजय के समय प्राप्त होने वाली एक चादर हज़रत ख़ालिद रज़ी. ने सेना के अधिकारियों की जानकारी में ला कर हज़रत अबू बकर रज़ी. को भेंट के रूप में भिजवाई और लिखा कि इसे आप स्वीकार कर लें, यह आपके लिए भेंट है, परन्तु आप रज़ी. ने उसे लेना उचित नहीं समझा और न अपने रिश्तेदारों को दी, बल्कि उसे हज़रत इमाम हुसैन रज़ी. को दे दी।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- शेष इन्शाअल्लाह आगे बयान होगा।

ख़ुत्बः जुम्अः के अंत में हुज़ूर-ए-अनवर ने दो मृतकों का सद्वर्णन फ़रमाया। इनमें से पहले मुकर्रम समीउल्लाह सियाल साहब वकीले ज़राअत (कषि) तहरीके जदीद रबवा थे। दूसरा वर्णन मुकर्रमा सिद्दीक़ा बेगम साहिबा पतनी अली अहमद साहब मरहूम मुअल्लिम वक़्फ़े जदीद का था।

हुज़ूर-ए-अनवर ने दोनों मृतकों को नमाज़े जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा भी फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131